याकूब

याकूब का पत्र

1 परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के दास
याकूब की तरफ़ से उन बारह गोत्रों को
जो जगह-जगह फैले हुए हैं, शांति।
2 हे मेरे भाईयो-बहनो, जब तुम तरह-तरह
की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरी
खुशी की बात समझो, 3 यह जान कर कि
तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज की
शुरूआत होती है। 4 लेकिन धीरज को अपना
पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो
जाओ और तुम में किसी तरह की कमी न
रहे।
5 अगर तुम में से किसी को बुद्धि की कमी
हो, तो परमेश्वर से माँगे, उसे मिलेगी। वही
हैं जो सब को बिना किसी संकोच के उदारता
से बुद्धि देते हैं। 6 लेकिन बिना शक किए हुए
विश्वास से माँगे, क्योंकि शक करने वाला
समुद्र की लहर की तरह है, जो हवा से बहती
और उछलती रहती है। 7 शक्की इन्सान यह न
समझे, कि उसे प्रभु कुछ देंगे। 8 ऐसा व्यक्ति
शक्की होने की वजह से अपने सारे जीवन में
डावाँडोल रहता है।
9 नीचे तबके वाला मसीही, अपने ऊँचे पद
के लिए खुश रहे। 10 जिस तरह से घास का
फूल मुर्झा जाता है, अमीर आदमी की भी
वही हालत होती है। 11 जैसे ही सूरज अपनी
तेज़ गर्मी के साथ उदय होता है, वह घास
को सुखा देता है, और उसका फूल गिर
जाता है, और उसकी खूबसूरती खत्म हो
जाती है। इसी तरह अमीर भी अपने रास्ते पर
चलते-चलते और अपने तरीके से ज़िन्दगी
बिताते हुए एक दिन खत्म हो जाएगा।
12 वह इन्सान सच में आशीषित है जो
परीक्षा में टिका रहता है, क्योंकि खरा
निकलने पर वह ज़िन्दगी का वह मुकुट
पाएगा जिस का वायदा यीशु ने अपने प्रेम
करने वालों को दिया है।
13 जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न
कहे, कि परमेश्वर मेरी परीक्षा कर रहे हैं।
बुरी बातों में परमेश्वर किसी की परीक्षा नहीं
करते हैं और न ही वे किसी की परीक्षा लेते
हैं। 14 हर इन्सान अपनी वासना से खिंचकर
और फँस कर परीक्षा में पड़ता है। 15 फिर
वासना गर्भवती होकर नाजायज़ बातों को
बढ़ावा देती है। ऐसी बातों के बढ़ जाने का
नतीजा बर्बादी और अन्त ही है।।
16 हे मेरे भाईयो-बहनो, गुमराह मत हो
जाना। 17 हर एक अच्छा और उत्तम ईनाम
आकाश की ज्योतियों के बनाने वाले
परमेश्वर की ओर से है, और वह न बदलने
वाले हैं। 18 परमेश्वर ने अपनी ही इच्छा से
सच्चे वचन के द्वारा हमें नया जन्म दिया ताकि
हम उनकी बनायी गयी सभी चीजों में से एक
तरह से पहली किश्त हों।
19 हे भाईयो-बहनो, तुम में हर एक जन
सुनने में दिलचस्पी दिखाने वाला और बोलने
में धीमा और गुस्से में धीमा हो। 20 इसलिए
कि जो कुछ परमेश्वर की निगाह में ठीक है
वह सब गुस्से का रवैया रख कर नहीं किया

जा सकता है। 21 इसलिए तुम्हारी ज़िन्दगी में
जो बुराई और सड़ाहट है, उसे दूर करके उस
संदेश को नम्रता से अपनाते जाओ, जो तुम्हारे
मनों में बोया जाता है। यह संदेश तुम्हारे प्राण[a]
के विकास में मददगार साबित हो सकता है।
22 बाइबल से सीखी बातों के अनुसार
किया करो। सुन कर, उसके हिसाब से न
करने वाले अपने आपको धोखा देते हैं।
23 क्योंकि जो कोई वचन[b] की बातों का
सुनने वाला है और वैसा करने वाला नहीं,
वह उस इन्सान की तरह है जो अपना चेहरा
शीशे में देखता है। 24 देख कर चले जाने के
बाद वह भूल जाता है कि मैं कैसा दिख रहा
था। 25 लेकिन जो इन्सान परमेश्वर की सिद्ध
इच्छा के अनुसार करना भूलता नहीं, उसके
काम का परिणाम फ़ायदेमंद होगा।
26 अगर कोई व्यक्ति अपने को धार्मिक
समझता है, लेकिन अपनी जीभ पर लगाम
नहीं लगाता तो वह धोखे में है और उसका
धार्मिकपन बेकार है। 27 हमारे परमेश्वर
पिता की निगाह में सच्ची उपासना यह है कि
अनाथों और विधवाओं की परेशानियों में
उनकी मदद करें और दुनिया के भ्रष्टाचार से
अपने आप को बचाएँ।

2 मेरे भाईयो-बहनो, महान प्रभु यीशु के
अनुयायी होने के कारण किसी के साथ
पक्षपात न करो। 2 उदाहरण के लिए मान
लो तुम्हारी सभा में एक व्यक्ति महँगे
कपड़े और गहने पहन कर और दूसरा गरीब
फटे-हाल आता है। 3 यदि तुम अमीर व्यक्ति
को बैठने की अच्छी जगह और सम्मान देते
हो, लेकिन गरीब को नीचे बैठने को या खड़ा
रहने को कहते हो, या कहते हो कि यहाँ
मेरे पाँव के पास बैठो, 4 तो क्या इस से
साफ़-साफ़ पक्षपात नहीं दिखता है कि तुम्हारे
विचार कितने खराब हैं?
5 मेरे भाईयो-बहनो, ध्यान से सुनो, क्या इस
दुनिया में जो गरीब लोग हैं और परमेश्वर से
प्रेम रखते हैं, उन्हें परमेश्वर ने विश्वास में
अमीर होने के लिए और प्रतिज्ञा किए हुए
राज्य के वारिस होने के लिए नहीं चुना है?
6 इसके बावजूद तुम गरीबों की बेइज़्ज़ती
करते हो? क्या अमीर लोग तुम्हारा शोषण
नहीं करते हैं, क्या वे ही तुम्हें अदालत तक
घसीट कर नहीं ले जाते हैं? 7 क्या जिस महान
यीशु के नाम से तुम कहलाते हो, उन्हीं की
निन्दा वे नहीं करते हैं?
8 हाँ यह सच है कि जब बाइबल के इस
महान आदेश को, कि दूसरों से अपने बराबर
प्रेम करो, का पालन तुम सच में करते
हो, तो अच्छी बात है। 9 लेकिन यदि तुम
पक्षपात करते हो, तो परमेश्वर की इच्छा के
विरोध में जाते हो, और अपराधी ठहरते हो।
10 वह इन्सान, जो एक को छोड़कर सभी
आज्ञाओं का पालन करता है, उस इन्सान
की तरह है जिस ने सभी आज्ञाओं को नहीं
माना है। 11 वही परमेश्वर जिस ने कहा था,
“व्यभिचार मत करना”, यह भी कहा कि
“खून मत करना”। इसलिए यदि तुमने किसी
का खून कर डाला है, लेकिन व्यभिचार नहीं
किया है तौभी तुमने संपूर्ण आज्ञाओं को तोड़
डाला है।
12 इसलिए जब कभी तुम कुछ कहते हो या
करते हो, यह याद रखना कि तुम्हारा इन्साफ़
प्रेम के उस नियम से होगा, जो तुम्हें बरी
करता है। 13 इसलिए यदि तुम दूसरों पर दया
नहीं दिखाते हो, तुम पर भी दया नहीं की
जाएगी। यदि तुम दूसरों के प्रति दयालु रहे
हो, तो तुम्हारे खिलाफ़ दिए गए परमेश्वर

[a] **1.21** बुद्धि, इच्छा- शक्ति और भावनाओं [b] **1.23** बाइबल

के फ़ैसले के ऊपर परमेश्वर की दया की जीत होगी।

14 प्यारे भाईयो-बहनो, यदि तुम अपने
कामों से अपने विश्वास का सबूत न दो, तो
तुम्हारे विश्वास के दावे की क्या कीमत?
इस तरह के विश्वास से किसी को कुछ
फ़ायदा नहीं हो सकता। 15 मान लो, कि
किसी भाई या बहन के यहाँ खाने और कपड़े
की किल्लत है, 16 और तुम उन से कहो,
'अपना ख्याल रखना, जाओ, परमेश्वर तुम्हें
आशीष दें, अपनी देख-भाल ठीक से करना',
- लेकिन उनको खाना और कपड़ा न दो,
तो ऐसे विश्वास से क्या फ़ायदा? 17 देखा
तुमने, कि सिर्फ़ विश्वास रखना काफ़ी नहीं
है। जिस विश्वास के साथ काम जुड़े हुए
नहीं हैं, वह विश्वास नहीं कहलाएगा - वह
बेकार और मरा हुआ है।

18 कोई कह सकता है - "तुम्हारे पास
सिर्फ़ विश्वास है लेकिन मैं कर्म को ज़्यादा
मानता हूँ। तुम बगैर कर्म के अपना विश्वास
दिखाओ, मैं अपने कर्म से अपना विश्वास
दिखाऊँगा।" 19 क्या अभी तक तुम यह
समझते हो कि 'एक परमेश्वर' पर मात्र
विश्वास काफ़ी है? कौन सी बड़ी बात है
दुष्टात्मा भी ऐसा करते हैं और डर से काँपते
हैं।

20 बेवकूफ़! तुम यह कब सीखोगे कि वह
विश्वास बेकार है, जिस के साथ अच्छे
काम नहीं हैं। 21 क्या तुम भूल गए हो कि
हमारे पूर्वज अब्राहम ने जब अपने बेटे
इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तभी परमेश्वर
की दृष्टि में खरा ठहराया गया। 22 देखो,
उसका परमेश्वर पर इतना भरोसा था कि,
जो कुछ परमेश्वर ने कहा, वह सब करने
के लिए तैयार हो गया। उसके विश्वास को
तभी पूरा माना गया जब उसने वह किया जो
उसे करने के लिए कहा गया था। 23 इसलिए,
जैसा बाइबल में लिखा है, वैसा ही हुआ,
अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया
और परमेश्वर ने उसके धर्मी[a] होने का
ऐलान किया। यहाँ तक कि उसे 'परमेश्वर
का दोस्त' कहा गया 24 इसलिए तुम देखो,
कि हम मात्र अपने विश्वास के द्वारा नहीं,
लेकिन जो कुछ करते हैं, उसकी वजह से
परमेश्वर के साथ सही रिश्ते में लाए जाते
हैं।

25 यौन व्यापारी राहब इस सच्चाई का एक
और सबूत है। परमेश्वर के साथ उसका
रिश्ता उसके कर्मों के द्वारा सुधर गया - जब
उसने उन भेदियों को दूसरे रास्ते से सुरक्षित
वापस लौटा दिया। 26 जिस तरह से बिना
आत्मा के देह मरी हुयी है, वैसे ही बिना कामों
के विश्वास भी मरा हुआ है।

3 प्रिय भाईयो और बहनो, चर्च में ज़्यादा
लोगों को शिक्षक नहीं बनना चाहिए,
क्योंकि हम सिखाने वालों के साथ परमेश्वर
ज़्यादा सख्ती के साथ पेश आएँगे। 2 हम सभी
बहुत गलतियाँ करते हैं, लेकिन जो इन्सान
अपनी ज़ुबान को वश में कर सकता है, खरा
मनुष्य है, और हर दायरे में अपने आपको
वश में कर सकता है।

3 एक छोटी सी लगाम को घोड़े के मुँह में
लगा कर हम जहाँ चाहें, उसे ले जा सकते
हैं। 4 चाहे हवा कितनी तेज क्यों न हो, एक
छोटी सी पतवार से, एक माझी एक बड़े
जहाज़ को कहीं भी मोड़ सकता है। 5 जीभ
हालांकि छोटा सा अंग है, लेकिन बहुत बड़ी
बर्बादी ला सकती है। एक छोटी सी चिंगारी
पूरे जंगल को जला सकती है। 6 जीभ आग

[a] 2.23 खरे

की एक लपट है। यह दुष्टता से भरी है जो
तुम्हारे पूरे जीवन को नाश कर सकती है। यह
तुम्हारे जीवन की पूरी दिशा को बर्बादी की
धधकती लपटों में बदल सकती है, क्योंकि
वह खुद नरक से सुलगायी जाती है।
7 सब तरह के जानवरों, चिड़ियों, रेंगने
वाले जीव और मछलियों को वश में किया
जा सकता है। 8 लेकिन जीभ को वश में
कोई नहीं कर सकता। यह अनियन्त्रित बुराई
है, जिस में खतरनाक ज़हर भरा हुआ है।
9 कभी-कभी यह हमारे प्रभु और पिता की
बड़ाई करती है और कभी परमेश्वर की
समानता में बनाए गए लोगों के खिलाफ़ ज़हर
उगलती है। 10 इसलिए आशीष और शाप
एक ही मुँह से उमड़ कर बाहर आते हैं।
मेरे भाईयो-बहनो, यह बिलकुल सही नहीं
है। 11 क्या पानी के एक झरने में से मीठा
और खारा, दोनों तरह का पानी निकलता है?
12 क्या अंजीर के पेड़ में जैतून और अंगूर की
बेल में अंजीर निकलते हैं? नहीं, न ही मीठा
पानी नमकीन झरने से निकलता है।
13 यदि तुम बुद्धिमान हो और परमेश्वर
के तौर तरीकों को समझते हो, तो भलाई
के जीवन को बना रहने दो, ताकि सिर्फ़
अच्छे काम किए जाएँ। और बिना डींग मारे
इन कामों को करने में सच्ची बुद्धिमानी है।
14 लेकिन यदि तुम्हारे मन में कड़वी ईर्ष्या
और स्वार्थमय कामना है तो घमण्डी होकर
सच्चाई का मखौल मत करवाना। 15 ऐसी
बुद्धि का स्रोत परमेश्वर नहीं हैं यह दुनियावी
है, शारीरिक और शैतानी है। 16 इसलिए कि
जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थी कामना है वहीं सब
तरह की गड़बड़ी और बुराई है।
17 लेकिन जो बुद्धि परमेश्वरीय है वह
पवित्र ,मिलनसार, कोमल और दूसरों की
अधीनता स्वीकार करने वाली है। यह दया
और अच्छे काम से भरी है। 18 इस में कभी
पक्षपात नहीं है, ईमानदारी है। जो लोग मेल
करवाते हैं, वे शान्ति बोते हैं और भलाई की
फ़सल काटते हैं।

4 तुम्हारे बीच लड़ाइयों और झगड़ों का
कारण क्या है? क्या तुम्हारे भीतर बुरी
इच्छाओं के संघर्ष के कारण से नहीं? 2 तुम
लालसा करते हो, और तुम्हें मिलता नहीं।
तुम हत्या और लालच करते हो और जो
चाहते हो वह हासिल नहीं कर पाते। क्योंकि
तुम्हें मिलता नहीं इसलिए दूसरों से छीना
झपटी करते हो। तुम्हारे पास है नहीं, क्योंकि
तुम परमेश्वर से माँगते नहीं हो। 3 माँगने पर
पाते इसलिए नहीं हो, क्योंकि गलत इरादे से
माँगते हो, ताकि सिर्फ़ अपनी इच्छाओं को
पूरा करो।
4 हे अविश्वसनीय लोगो क्या तुम्हें यह
नहीं मालूम कि इस दुनिया की दोस्ती तुम्हें
परमेश्वर का दुश्मन बनाती है? मैं फिर
कहता हूँ कि यदि तुम्हारा मकसद इस दुनिया
का मज़ा लूटना है, तो तुम परमेश्वर के दोस्त
नहीं हो सकते। 5 क्या तुम बाइबल में लिखी
इस बात को बेकार समझते हो, 'परमेश्वर
ने हमारे भीतर जिस पवित्र आत्मा को रखा
है, इस बात के लिए लालायित रहता है, कि
हम विश्वासयोग्य बने रहें।' 6 परमेश्वर हम
पर बहुत कृपा बनाए रखते हैं। ऐसा लिखा
है, "परमेश्वर घमण्डी इन्सान का मुकाबला
करते हैं, लेकिन नम्र पर कृपा करते हैं।"
7 इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ।
शैतान का मुकाबला करो और वह तुम्हारे
पास से भाग खड़ा होगा। 8 परमेश्वर की
नज़दीकी हासिल करो, तुम्हें भी उनकी
नज़दीकी का अनुभव हो जाएगा। गुनाहगारों
अपने हाथों को शुद्ध करो, दो मन वालो अपने

मन को शुद्ध करो। 9 दुखी होओ, विलाप
करो और रोओ। तुम्हारी हँसी रोने में बदल
जाए और खुशी निराशा में। 10 परमेश्वर की
निगाह में अपने आपको नम्र करो, तो वह
तुम्हें आदर देंगे।
11 एक दूसरे की बुराई मत करो। जो अपने
भाई-बहन के खिलाफ़ में बोलता है और
दोष लगाता है वह परमेश्वरीय शिक्षाओं की
आलोचना करता है। यदि तुम परमेश्वरीय
शिक्षाओं की आलोचना करते हो, तो उस पर
चलने वाले नहीं ठहरे , लेकिन उस पर दोष
लगाने वाले हो गए हो, 12 निर्देश देने वाले
एक ही हैं, जिन्हें बचाने और बर्बाद करने का
अधिकार है। किसी को अपराधी ठहराने का
काम तुम्हें किस ने दिया है?
13 तुम कहते हो कि इन्हीं दिनों में और आने
वाले दिनों में हम किसी दूसरे शहर जाकर
एक साल व्यापार करके कुछ कमाएँगे।
14 सच्चाई तो यह है कि तुम्हें नहीं मालूम कि
कल क्या होगा, तुम्हारा जीवन है ही क्या?
यह भाप की तरह है कुछ देर तक दिखती
है, फिर गायब हो जाती है। 15 इसके बजाए
तुम्हें यह कहना चाहिए कि अगर यीशु चाहें
तो हम ज़िन्दा रहेंगे और यह या वह काम
करेंगे। 16 लेकिन तुम तो अपनी योजनाओं के
सिलसिले में घमण्ड करते हो। हर तरह का
घमण्ड बुरा है। 17 इसलिए जो भलाई करना
जानता है, लेकिन करता नहीं, वह जीने के
उद्देश्य या मकसद को भुला चुका है।।

5 हे अमीर लोगो सुनो, तुम्हारे भविष्य में
तुम्हारा जो हाल होने वाला है, उसकी
वजह से रोओ और विलाप करो। 2 तुम्हारी
दौलत बर्बाद हो गयी और तुम्हारे कपड़े
कीड़े खा गए। 3 तुम्हारा सोना-चाँदी खराब
हो चुका है। उसका खराब होना ही तुम्हारे
खिलाफ़ गवाही देगा, वही तुम्हारी देह को
आग की तरह खा डालेगी। जो खज़ाना
तुमने इकट्ठा कर लिया है, इन्साफ़ के दिन
वही तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देगा। 4 देखो,
जिन मजदूरों ने तुम्हारी फ़सल काटी, उनकी
मजदूरी तुमने हथिया ली। उनकी मजदूरी
तुम्हारे खिलाफ़ चिल्ला रही है। फ़सल काटने
वालों की पुकार सर्वशक्तिमान प्रभु के कान
तक पहुँच चुकी है। 5 इस पृथ्वी पर तुमने
अपनी हर एक इच्छा को पूरा करने और
विलासिता में अपना जीवन गवाँ दिया। तुमने
अपने मन को वध के दिन[a] के लिए मोटा
ताज़ा कर लिया है। 6 जो लोग अपना बचाव
खुद नहीं कर सकते थे, उन लोगों को तुमने
दोषी ठहराया और मार भी डाला।
7 प्रिय भाईयो-बहनो, यीशु के आने तक
धीरज रखो। देखो किसान ज़मीन की कीमती
उपज के लिए तब तक धीरज के साथ
इन्तज़ार करता है, जब तक वह शुरू की और
आखिरी बारिश नहीं देख लेता है। 8 इसलिए
कि यीशु का आना नज़दीक है, तुम भी धीरज
रखने के साथ अपने मन में मज़बूत रहो।
9 एक दूसरे के खिलाफ़ मन में शिकायतें मत
रखो , ताकि तुम्हारे साथ भी ऐसा न किया
जाए। देखो, जज[b] हम को लेने आने वाले हैं।
10 मेरे भाईयो-बहनो, धीरज से दुख उठाने
के सम्बन्ध में उन नबियों को याद करो,
जिन्होंने प्रभु की तरफ़ से चेतावनी दी थी।
11 उन लोगों को हम काफ़ी आदर देते हैं,
जो धीरज से सहते रहते हैं। धीरज से सहने
वालों में अय्यूब एक नमूना है। उसके अनुभव
से हम सीखते हैं, कि परमेश्वर की योजना
का अन्त किस तरह से भलाई में होता है,
इसलिए कि प्रभु कोमल हैं और कृपालु भी।

[a] 5.5 न्याय के दिन [b] 5.9 यीशु

12 मेरे भाईयो-बहनो, सब से ज़्यादा यह कि
न तो स्वर्ग[a], न धरती और न किसी और
की कसम खाओ। साफ़-साफ़ 'हाँ' कहो या
'नहीं', ताकि तुम चूक न जाओऔर दोषी न
ठहरो।
13 क्या तुम में से कोई दुखों में से होकर
गुज़र रहा है? वह परमेश्वर से कहे। क्या
कोई खुश है? वह गीत गाए। 14 क्या तुम में
से कोई बीमारी के बिस्तर पर पड़ा हुआ है
?वह चर्च के बुजुर्ग अगुवों को बुलाए ताकि
वे तेल मल कर यीशु के नाम से उसके लिए
प्रार्थना करें। 15 विश्वास में की गयी उनकी
प्रार्थना से बीमार ठीक हो जाएगा। यीशु उसे
उठा खड़ा करेंगे और अगर वह बलवई[b] भी
रहा हो तो उसे माफी मिल जाएगी।।
16 जाने अनजाने में दूसरों के विरोध में
किए गए गुनाहों को मान लो, एक दूसरे के
लिए परमेश्वर से माँगो, ताकि तुम स्वस्थ
हो जाओ। जिसके जीवन में ईमानदारी और
सच्चाई है, उसकी बिनती बहुत असरदार
होती है।
17 एलिय्याह भी तो हमारी तरह एक इन्सान
था। उसने लौ लगा कर माँगा कि बरसात
न हो और ऐसा ही हुआ। लगभग साढ़े तीन
साल तक पानी नहीं बरसा। 18 जब फिर से
उसने प्रार्थना की, तो बारिश हुयी और उपज
भी।
19 भाईयो-बहनो, यदि तुम में से कोई सच्चाई
से बहक जाता है और दूसरा कोई उसे वापस
रास्ते पर ले आता है, 20 तो वह यह जाने कि
जो कोई किसी भटके हुए को वापस लाता
है, वह उसकी आत्मा को मौत[c] से बचाता है
और असंख्य गुनाहों को ढाँपता है।

---

[a] **5.12** आकाश [b] **5.15** ज़िद्दी या विद्रोही [c] **5.20** नरक

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com